चरैवेति चरैवेति

महात्मा ज्योतिबा फुले
रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

Newsletter

Dept. of Plant Science, MJP Rohilkhand University, Bareilly

Department in News

6 दैनिक जागरण बरेली, 15 अक्टूबर, 2020

शैवाल के जरिए पता चलेगा जल का प्रदूषण

30 लाख रुपये की ग्रांट केंद्र सरकार के डिपार्टमेंट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी विभाग ने दी है

रामगंगा के पानी के साथ किया जाएगा शोध

मास कम्युनिकेशन कोर्स होगा बंद

---

4 iNEXT CITY

www.inextlive.com/news

दैनिक जागरण, Bareilly, 15 October 20

अब शैवाल के जरिए आसानी से पता चलेगा वाटर पॉल्यूशन

रुहेलखंड विश्वविद्यालय के प्लांट साइंस के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. ललित कुमार पांडेय को मिला प्रोजेक्ट

केंद्र सरकार के डिपार्टमेंट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी विभाग ने प्रोजेक्ट के लिए दी है 30 लाख रुपये की ग्रांट

bareilly@inext.co.in

BAREILLY (14 Oct): अब शैवाल के जरिए पानी में होने वाले प्रदूषण का पता आसानी से चल सकेगा. इस पर शोध करने के लिए डिपार्टमेंट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी के साइंस एंड इंजीनियरिंग रिसर्च बोर्ड ने रुहेलखंड विश्वविद्यालय के प्लांट साइंस डिपार्टमेंट के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. ललित पांडेय को प्रोजेक्ट दिया है. इस स्टार्टअप रिसर्च ग्रांट के लिए 30 लाख रुपये की ग्रांट मंजूर की गई है. यह प्रोजेक्ट दो साल में पूरा करके अपनी रिपोर्ट देनी होगी.

डाईएटम बनेगा मददगार

प्लांट साइंस विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. ललित कुमार पांडेय ने बताया कि करीब 12 तरह के शैवाल पाए जाते हैं. इनमें एक शैवाल जिसको डाईएटम बोलते हैं. इसकी बाहरी परत पत्थर की तरह कठोर होती है. छोटे आकार का यह शैवाल समुद्र में सबसे ज्यादा पाया जाता है. यह बताते हैं कि पानी के प्रदूषण की वजह से यह शैवाल विकृत हो जाते हैं. ऐसा शोध में सामने आ चुका है.

डाईएटम पर होगी रिचर्स

अब इस पर गहन अध्ययन के लि[...] मुरादाबाद, राम गंगा के पानी के [...] उत्तराखंड में ग्लैशियर के स्थान [...] शोध किया जाएगा. यह देखा जा[...] कि पानी में किस तरह का प्रदू[...] है, जिससे शैवाल विकृत हो रहे [...] इसके अलावा जलवायु परिवर्तन [...] वजह से इन शैवाल पर क्या अ[...] पड़ता है, यह भी शोध का विषय [...] इसके लिए अलग-अलग नदियों [...] पानी पर शोध किया जाएगा जि[...] स्थिति स्पष्ट हो जाएगी.

हिन्दुस्तान • बरेली • शनिवार • 20 मार्च 2021 • 08

प्रो. वीपी सिंह को बीरबल साहनी पुरस्कार मिला

प्रोफेसर वीपी सिंह को बीरबल साहनी अवार्ड से सम्मानित किया गया।

बरेली | प्रमुख संवाददाता

रुहेलखंड विश्वविद्यालय पूर्व प्रति कुलपति रहे प्रोफेसर वीपी सिंह को बॉटनी के क्षेत्र में प्रतिष्ठित बीरबल साहनी अवार्ड से सम्मानित किया गया है। इंडियन बॉटनिकल सोसाइटी के लखनऊ में आयोजित 56वें शताब्दी समारोह में प्रोफेसर वीपी सिंह को यह अवार्ड मिला। यह अवार्ड भारत मे पादप विज्ञान (बॉटनी) के सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक को प्रदान किया जाता है।

रुहेलखंड विवि के पूर्व प्रति कुलपति प्रो. वीपी सिंह बॉटनी के भारत के जाने माने विशेषज्ञ हैं। उन्होंने 100 से अधिक शोध पत्र विश्व के ख्याति लब्ध रिसर्च जर्नल्स में प्रकाशित किये है। उनके शोध निर्देशन में 27 शोधकर्ताओं ने अपनी पीएचडी पूर्ण की है। उन्होंने 8 रिसर्च प्रोजेक्ट पूर्ण किये है। विदित हो कि राष्ट्रीय स्तर का ये सम्मान पाने वाले वह बरेली के पहले शिक्षक है। प्रोफेसर सिंह ने रोहिलखंड विश्वविद्यालय में 35 वर्षों से भी अधिक समय से शिक्षण और शोध कार्य पूर्ण किया है। उनके पढ़ाये हुए बहुत से स्टूडेंट्स देश और विदेशों में वैज्ञानिक, शिक्षक और सरकारी अधिकारियों के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे है। प्रोफेसर सिंह रुहेलखंड विवि में नैक कोऑर्डिनेटर, चीफ प्रॉक्टर, विभागाध्यक्ष, डीन, प्रति कुलपति सहित कई पदों पर रह चुके हैं और वह वर्तमान में प्रोफेसर एमिरेट्स के रूप में कार्यरत है।

हैवी मेटल सोखने वाले पौधों पर किया शोध

प्रोफेसर वीपी सिंह ने जमीन और पानी से लेड, क्रोमियम, कैडमियम, आर्सेनिक जैसी हैवी मेटेरियल को पौधों के जरिए सोखने की क्षमता पर शोध किया था। उन्होंने पाया था कि हैवी मेटल सोखने की क्षमता सरसों और खस घास में पाई जाती है।

अमर उजाला बरेली

बरेली | बृहस्पतिवार, 15 अक्तूबर 2020 6

किन हालात में पानी साफ नहीं कर पाता शैवाल.. होगा शोध

रुहेलखंड विश्वविद्यालय के प्लांट साइंस विभाग को मिली जिम्मेदारी

अमर उजाला ब्यूरो

प्रदूषित पानी, ग्लेशियर और वातावरण में बदलाव का होगा अध्ययन

लिपिड बॉडी से बायो डीजल बनाने पर होगा अध्ययन

Department in News

शोध में मददगार होगा विश्वविद्यालय का बॉटेनिकल गार्डन

बॉटेनिकल गार्डन का निरीक्षण करते कुलपति।

बरेली। रुहेलखंड विश्वविद्यालय में प्लांट एंड साइंस विभाग की ओर बॉटेनिकल गार्डन विकसित किया जा रहा है। इसका उपयोग शोध कार्यों के लिए किया जाएगा। शुक्रवार को कुलपति प्रो. केपी सिंह ने गार्डन का निरीक्षण किया। उन्होंने विभाग के शिक्षकों को शोध कार्य को बढ़ावा देने के लिए भी प्रेरित किया।

कुलपति ने विश्वविद्यालय परिसर में करीब सात एकड़ जमीन पर विकसित हो रहे बॉटेनिकल गार्डन को देखा। उन्होंने प्लांट एंड साइंस विभाग के शिक्षकों से कहा कि शोध के लिहाज से यह गार्डन काफी महत्वपूर्ण है। इसमें उन दुर्लभ पौधों को रोपित किया जाए, जिन पर शोध से कुछ नई और महत्वपूर्ण जानकारियां हासिल हो सकती हों। उन्होंने गार्डन में तैयार उस ढांचे को भी देखा, जिसमें पानी से काई और उससे पौधे बनने का चक्र बना है। कुलपति ने इसकी प्रशंसा करते हुए इस तरह के और भी कार्य कराने की आवश्यकता पर जोर दिया। इस मौके पर सेवानिवृत्त शिक्षक प्रो. वीपी सिंह, प्रो. आलोक श्रीवास्तव, प्रो. संजय गर्ग, प्रो. योगेंद्र प्रसाद, प्रो. जेएन मौर्य, प्रो. अमित सिंह, तपन कुमार वर्मा आदि मौजूद रहे। ब्यूरो

प्लांट एंड साइंस की ओर से तैयार किए जा रहे गार्डन का कुलपति ने किया निरीक्षण

अब एमएससी में करनी होगी 2 साल तक रिसर्च

बरेली | प्रमुख संवाददाता

मास्टर ऑफ साइंस (एमएससी) की डिग्री पाने के लिए अब रुहेलखंड विश्वविद्यालय के छात्रों को रिसर्च भी करनी होगी। [illegible]

रुहेलखंड विश्वविद्यालय के प्लांट साइंस विभाग ने पाठ्यक्रम में बड़ा बदलाव किया है। शिक्षा में इनोवेशन शामिल करने के मकसद से एमएससी के सिलेबस में शोध को अनिवार्य कर दिया गया है। [illegible]

अन्य पाठ्यक्रमों में भी लागू होगा नियम

एमएससी प्लांट साइंस में इनोवेशन को बढ़ावा देने के लिए यह प्रयोग शुरू किया गया है। इसको एक मॉडल के रूप में तैयार किया गया है। इसकी विधि को अन्य एमएससी पाठ्यक्रमों में भी लागू किया जाएगा। इसको लेकर बोर्ड ऑफ स्टडीज के कन्वीनर प्रो. आलोक श्रीवास्तव ने कुलपति को रिपोर्ट भेज दी है।

अब इसमें इनोवेशन भी शामिल किया गया है। इसके तहत एमएससी फाइनल सेमेस्टर में प्रैक्टिकल को हटा दिया गया है। स्टूडेंट को प्रथमवर्ष में ही शोध के लिए एक टॉपिक दिया जाएगा। इसपर दो वर्ष में छात्रों को अपना शोध पूरा करना होगा। यह प्रक्रिया पूरी तरह से पीएचडी की तरह होगी पर यह केवल दो साल की होगी जबकि पीएचडी चार साल में पूरी करनी होती है। बीओएस मीटिंग में हेड डॉ. जेएन मौर्य सहित अन्य सदस्य शामिल हुए।

"एमएससी में इनोवेशन को बढ़ावा देने के लिए दो साल के कोर्स में दो साल का शोध समानांतर चलेगा। फाइनल में प्रैक्टिकल हटाया गया और इसकी स्थान पर शोध ग्रंथ जमा करना होगा। इसके बाद ही विवि से डिग्री मिलेगी।

प्रो. आलोक श्रीवास्तव, कन्वीनर, बीओएस प्लांट साइंस

छात्र भी रिसर्च के लिए चुन सकेंगे विषय

प्लांट साइंस विभाग में प्रवेश करने लेने वाले छात्रों को रिसर्च टॉपिक दिए जाएंगे। छात्र अपनी पसंद के टॉपिक भी चुन सकेंगे और उसपर उनको दो साल तक शोध करना होगा। शोध में ज्यादा मुश्किल न आए इसके लिए फाइनल सेमेस्टर से प्रैक्टिकल को हटा दिया गया है छात्र शोध करेंगे और शोध ग्रंथ (थीसिस) लिखेंगे। शोध पूरा करने के बाद उनको थीसिस जमा करनी होगी। थीसिस की जांच आंतरिक और बाह्य परीक्षक करेंगे।

कचरा प्रबंधन की आधुनिक विधियां रोकेंगी प्रदूषण

इस वर्ष 5 जून को अंतरराष्ट्रीय पारिस्थितिकी पुनरुद्धार दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। मनुष्य द्वारा किए गए कार्यों का फल पारिस्थितिकी विनाश के रूप में दिखाई दे रहा है हिमखंडों का क्षरण हो, जय विविधता में आई कमी हो, वायु का गिरता स्तर हो या जल प्रदूषण हो सभी जगह मनुष्य द्वारा स्वार्थ के लिए की गई क्रिया ही इसके लिए उत्तरदायी है जिस कारण पारिस्थिति की मरम्मत की आवश्यकता अब अनिवार्यता में परिवर्तित हो गई है इस मरम्मत में जैविक और अजैविक दोनों तत्वों का महत्वपूर्ण योगदान है पारिस्थितिक क्षति में अपशिष्ट प्रबंधन के प्रति लापरवाही एक बहुत बड़ा कारण है वर्तमान समय में अपशिष्ट एक बहुत बड़ी समस्या है कई अध्ययनों में यह बात प्रमाणित हो गई है की समुद्री अपशिष्ट से न केवल समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र की उत्पादकता पर प्रभाव पड़ रहा है बल्कि कई समुद्री प्रजातियों के जीवन पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है औद्योगिक अपशिष्ट न केवल हमको भौतिक रूप से समस्याएं पैदा कर रहा है बल्कि आनुवंशिक रूप से भी हमें प्रभावित कर रहा है। ई कचरा के रूप में एक नई समस्या हमारे सामने है ई-कचरा के क्षेत्र में भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक है भारत चीन और अमेरिका के साथ मिलकर कुल ई कचरा का 39 परसेंट योगदान देता है। इन चुनौतियों को कचरा प्रबंधन की आधुनिक विधियों के द्वारा ही निपटा जा सकता है।

डॉ. आलोक श्रीवास्तव
वनस्पति विज्ञान, एम.जे.पी. रुहेलखंड युनिवर्सिटी, बरेली

अपशिष्ट प्रबंधन परिवहन संसाधन पुनर्चक्रण या अपशिष्ट के काम में प्रयोग की जाने वाली सामग्री का संग्रह है जो मानव गतिविधियों से बनती है और यह इसलिए किया जाता है ताकि मानव पर उसके स्वास्थ्य पर्यावरण व अन्य गतिविधियों में इसका प्रभाव कम हो अपशिष्ट प्रबंधन संसाधन निकालने के लिए भी होता है। कोविड-19 के प्रबंधन में भी म्युनिसिपल कचरे के प्रबंधन का पुलिस महत्वपूर्ण रोल है एक सर्वे के अनुसार म्युनिसिपल सीवर में कोविड-19 वायरस मिला है जो बाद में कोविड-19 संक्रमण का कारण बन सकता है। कचरा प्रबंधन में 4आर का प्रयोग सबसे महत्वपूर्ण है रीयूज, रिड्यूस, री साइकिल और रिफ्यूज। कचरा प्रबंधन के लिए प्रकृति ने स्वयं भी बहुत उपाय करें हैं बहुत सारे ऐसे पौधे हैं जो जमीन और वायु से विषैले तत्वों को तत्वों को अपने अंदर अवशोषित कर लेते हैं भारी तत्व जैसे मरकरी लैड कैडमियम आदि को सूरजमुखी गेंदा सरसों आदि पौधे अब सूचित कर लेते हैं और पारिस्थितिक तंत्र को क्षतिग्रस्त होने से बचाते हैं बहुत से विषैले तत्व जैसे नाइट्रोफेनॉल को बैक्टीरिया साधारण तत्वों में तोड़ता है और विषैले तत्वों से रक्षाकरता है। कचरा प्रबंधन की आधुनिक तकनीक से हम अपने द्वारा किए गए पारिस्थितिक तंत्र के नुकसान को काफी हद तक सुधार सकते हैं अन्यथा हमें आने वाले समय में और अधिक बीमारियों और समस्याओं का सामना करने को तैयार रहना होगा।

सार-संक्षेप

प्रो. वीपी सिंह को मिला वीरबल साहनी पुरस्कार

बरेली। एमजेपी रुहेलखंड विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. वीपी सिंह को वीरबल साहनी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। भारतीय वानस्पतिक सोसायटी के लखनऊ में आयोजित 43वें अखिल भारतीय वानस्पतिक सम्मेलन और शताब्दी समारोह में शुक्रवार को उन्हें यह पुरस्कार दिया गया। यह पुरस्कार वर्ष में एक बार पूरे देश के एक वनस्पति विज्ञान के वैज्ञानिक को दिया जाता है। अब तक 56 लोगों को यह पुरस्कार दिया गया है। इस वर्ष का पुरस्कार प्रो. वीपी सिंह को दिया गया। यह पुरस्कार पाने वाले वह बरेली के पहले शिक्षक हैं। वीपी सिंह के अब तक 100 रिसर्च पेपर प्रमुख जर्नल्स में छप चुके हैं। 29 छात्रों ने उनके पर्यवेक्षण में शोध किया है और आठ प्रोजेक्ट्स पूरे किए हैं। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान के डा. आलोक श्रीवास्तव भी शामिल हुए।

पुरस्कार ग्रहण करते प्रो. वीपी सिंह।

www.amritvichar.com | बरेली, शनिवार, 2 जनवरी 2021

पहल | रुविवि में जल्द बनाया जाएगा तालाब, दिल्ली और लखनऊ के बीच सेंटर प्वाइंट होगा गार्डन

जल्द खाएंगे बॉटनिकल गार्डन का मखाना

अमृत विचार, बरेली

महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय परिसर में स्थित बॉटनिकल गार्डन में जल्द ही मखाने की खेती होगी। इसके लिए यहां बड़ा तालाब बनाया जाएगा। इस गार्डन को दिल्ली और लखनऊ के बीच का सेंटर बनाया जाएगा। इसे आमजन के लिए भी खोला जाएगा।

नव वर्ष पर कुलपति प्रोफेसर केपी सिंह ने विश्वविद्यालय परिसर में बने बॉटनिकल गार्डन का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने गार्डन में सुधार के साथ-साथ नई व्यवस्थाओं की शुरुआत करने के भी निर्देश दिए। कुलपति ने गार्डन को विकसित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर से भी फंड जुटाने की बात कही है। इसके लिए प्रस्ताव तैयार किया जाएगा। उन्होंने निरीक्षण के दौरान मौजूद शिक्षकों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं भी दीं।

बॉटनिकल गार्डन का निरीक्षण करते कुलपति प्रोफेसर केपी सिंह। ● अमृत विचार

कुलपति ने गार्डन के रखरखाव एवं साफ-सफाई पर प्रसन्नता जताई। इसके लिए उन्होंने प्लांट साइंस के शिक्षकों एवं कर्मचारियों की सराहना भी की। कुलपति ने प्लांट साइंस विभागाध्यक्ष डा. आलोक श्रीवास्तव से कहा कि बॉटनिकल गार्डन में बड़ा तालाब नहीं है। यहां पौधों के लिए क्लाईमेट जोन भी नहीं है। उन्होंने इन दोनों की व्यवस्था करने के निर्देश दिए। बड़े तालाब में मखाने की खेती की जाएगी। डा. आलोक श्रीवास्तव ने बताया कि विश्वविद्यालय परिसर में जंगल था। करीब पांच एकड़ के जंगल को बॉटनिकल गार्डन में तब्दील किया गया है। वर्ष 2016 से बने गार्डन में 500 से अधिक प्रजाति के पौधे लगे हैं जिसमें ज्यादातर पौधे औषधीय हैं।

गार्डन में सिंदूर, कोकोनेट, समेत अन्य पौधे भी हैं। गार्डन में सबसे ज्यादा बांस की प्रजाति है। इसके पीछे मकसद साफ है कि बरेली को बांस बरेली के नाम से भी जाना जाता है। बांस बरेली की प्रमुख पहचान है। बॉटनिकल गार्डन के दौरान विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त शिक्षक प्रोफेसर वीपी सिंह, प्रोफेसर संजय गर्ग, प्रोफेसर योगेंद्र प्रसाद, चीफ प्रॉक्टर प्रोफेसर जेएन मौर्य, डॉ. अशोक कुमार सिंह एवं मीडिया प्रभारी डॉ. अमित सिंह सहित सुधाकर मौर्य एवं तपन कुमार वर्मा मौजूद रहे।

Late. J.N. Rai Memorial Lecture’s

Conference’s/Workshop’s

Anti-Drug Campaign

Prof. V.P. Singh

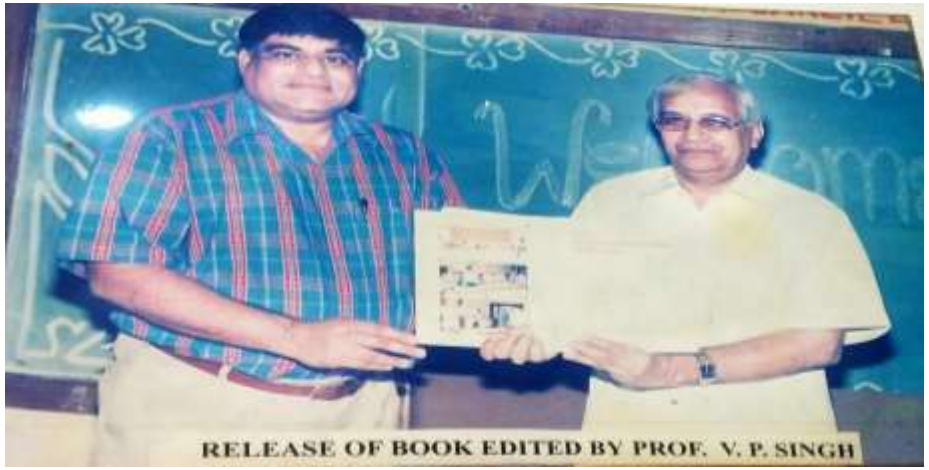

UGC Team Visit

Indian Science Congress